भारतीय समाज में पुरुष–आत्महत्याः एक अध्ययन

ज्योति काला
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
jyotikala2010@gmail.com

प्राप्त तिथि–25.10.2018, स्वीकृत तिथि–08.11.2018

सार– पुरूष अधिकारों के लिये संघर्षरत् एवं स्त्रीवाद के विरोधी लोगों का मानना है कि विवाहित स्त्रियों की अपेक्षा विवाहित पुरूष अधिक आत्महत्या करते हैं। उनके अनुसार पितृसत्तात्मक व्यवस्था का दुष्प्रभाव स्त्रियों की अपेक्षा पुरूषों पर कहीं अधिक पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारतवर्ष में पुरूषों द्वारा आत्महत्या के सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं जैविक कारणों का विश्लेषण शोध–आंकड़ों के आधार पर किया गया है। आलेख का उद्देश्य भारतीय परिप्रेक्ष्य में इस गम्भीर परन्तु उपेक्षित समस्या के निवारण हेतु जागरूकता फैलाना है।

बीज शब्द– पुरुष प्रधान व्यवस्था, मनोवैज्ञानिक तथा जैविक कारक।

Male–suicides in an Indian society-a study

Jyoti Kala
Associate Professor, Department of English
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
Jyotikala2010@gmail.com

Abstract– Activists advocating male rights and opposing feminism believe that in comparison to married women the married men commit suicide in greater number. According to them the patriarchal system affects men more negatively than women. To analyze this point of view on the basis of research data, an attempt has been made to represent the social, psychological and biological factors responsible for male-suicides. The objective of the paper is to draw attention and generate awareness towards this serious, however, neglected problem of Indian society.

Key words- patriarchal system, psychological and biological factors.

1. परिचय– भारत में पितृसत्तात्मक समाज में स्त्रियों के मानवीय अधिकारों के हनन, उत्पीड़न एवं असमानता जैसे विषयों पर अनवरत विमर्श तथा उपाय–क्रियान्वयन का प्रयास होता रहा है। अनेकों आन्दोलनों, जागरूकता कार्यक्रमों आदि के उपरांत भी स्त्रियों पर अत्याचार एवं हिंसा की भयानक घटनायें मानवता को आये दिन लज्जित करती हैं। कितने ही प्रयासों के बाद भी रूढ़िवादी पितृसत्तात्मक सोच की गहरी जड़ों ने आज भी स्त्रियों को समानता और सुरक्षा का वातावरण प्रदान नहीं किया है। हमारे समाज के इस निन्दनीय, घृणित और कलंकित पक्ष के प्रति हम सचेत हैं और निरंतर इस समस्या के निवारण के लिये प्रयासरत भी हैं परन्तु समाज के पुरूष वर्ग को किन विपरीत परिस्थितियों में दमन, असमानता और मानवाधिकार–हनन जैसी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है और कितने ही दबावों को न सह पाने की स्थिति में उनके द्वारा की जाने वाली आत्महत्या के गंभीर पक्ष पर आवश्यक ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

स्त्री–आत्महत्या के समान ही पुरूष–आत्महत्या की पृष्ठभूमि में भी अनेकों कारण हैं, जिनका विश्लेषण मुख्यतः जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से किया जा सकता है। उपर्युक्त समस्त पक्ष पुरूषों के जीवन को कठिन, असंगत और असहनीय बनाने में कोई कमी नहीं छोड़ते और इनके प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता और निवारण हेतु उचित तथा प्रभावी प्रयासों की महती आवश्यकता है। प्रतिवर्ष लगभग 8 लाख लोग आत्महत्या करते हैं और इन आत्महत्याओं के कारणों में भौगौलिक क्षेत्र, जाति, आयु अथवा सामाजिक स्थिति आदि सम्मिलित नहीं हैं। वैश्विक स्तर पर आत्महत्या करने वालों पर हुए शोध से वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि कारण चाहे जो भी हो परन्तु पूरे विश्व में स्त्रियों की तुलना में पुरूषों द्वारा अधिक आत्महत्या करने का चलन पाया गया है। इस तथ्य के आधार पर मनोवैज्ञानिक कारणों पर विचार करना आवश्यक है।

2. **पुरूष–आत्महत्या की मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि–** अमेरिकन फाउण्डेशन फॉर स्यूसाइड प्रिवेन्शन के अनुसार वर्ष 2013 में आत्महत्या द्वारा मरने वाले लोगों में पुरुषों की दर स्त्रियों से लगभग चार गुना अधिक थी। मोज़ैक साईन्स की रिपोर्ट के अनुसार कुछ क्षेत्रों में यह अनुपात 10 में से 8 पुरूष–आत्महत्या तक थे।[1] क्लिनिकल मनोवैज्ञानिक मार्टिन सीगर के अनुसार समाज द्वारा तय की गई पुरुष की भूमिका का दबाव इस समस्या का एक मुख्य कारण है। भारतीय समाज में पुरुषतत्व की अवधारणा के अनुसार 'पौरुष' का लेबल प्राप्त किया जा सकता है और खोया भी जा सकता है। यह विचार पुरुषों को अपनी एवं दूसरों की दृष्टि में 'स्वयं' को सिद्ध करने का प्रतिमान(बायस) बन जाता है और इस मनोदशा से पुरुष मुक्त नहीं हो पाते। सीगर मानते हैं कि यदि किसी महिला की नौकरी छूट जाये तो उसे दुख तो होगा परन्तु उसके आत्म–सम्मान को उतनी क्षति नहीं पहुंचेगी जितनी कि किसी पुरूष की नौकरी छूट जाने पर उसे होगी। महिला पुरूषों की अपेक्षा सहायता लेने में भी उतना संकोच नहीं करेंगी जितना एक पुरूष समाज में अपनी संरक्षक और पोषक की छवि के कारण संकोच करेगा।[2]

3. **सामाजिक–सांस्कृतिक प्रतिमान–** वर्ष 2011 में आंध्र प्रदेश के अनन्तपुर जिले में किसानों द्वारा आत्महत्या पर किये गये एक अध्ययन में पाया गया कि 48 प्रतिशत आत्महत्यायें कृषि संबंधी समस्याओं के कारण हुई, जबकि लगभग 45 प्रतिशत आत्महत्यायें कृषि से सम्बन्धित नहीं थीं। इनके पीछे कृषि को छोड़कर अन्य कारण जैसे संभ्रात परिवार में बेटी का विवाह करने में असमर्थता, दहेज न दे पाने की समस्या, यौन–व्यवहार संबंधी समस्यायें आदि सम्मिलित पायी गयी। प्रो0 नीलोत्पल कुमार[3] द्वारा किये गये इस अध्ययन में पाया गया कि सांस्कृतिक रूप से स्थापित ''पौरुष'' के प्रतिमान पर खरा न उतर पाने पर समाज में तिरस्कार और शर्मिदगी को असफल पुरुषों द्वारा सहन करना कठिन हो जाता है और वो अधिकतर आत्महत्या करने का प्रयास करते हैं। एक बार आत्महत्या करने में असफल रह जाने पर अक्षम, कमजोर और हेय दृष्टि से देखे जाने की शर्मिदगी न सह पाने के कारण ऐसा पुरुष दोबारा आत्महत्या कर लेता है। उक्त अध्ययन पर विचार व्यक्त करते हुए ए0 श्रीनिवास कहते हैं कि कृषि संबंधी दशाओं के अतिरिक्त परम्परा एवं नवीनता के बीच टकराव भी पुरूषों द्वारा की जाने वाली आत्महत्या के पीछे एक प्रमुख कारण है कई बार तो पिता की इच्छा के विरुद्ध बोरवेल खोदने में धन गंवा देने पर पुत्र द्वारा जीवन समाप्त करने जैसे कारण भी सामने आये हैं। श्रीनिवास किसान के आत्महत्या के तीन प्रमुख कारण मानते है। कृषि सम्बन्धी, सामाजिक ''मर्दानगी'' की अवधारणा सम्बन्धी और उपभोक्तावादी संस्कृति के आक्रमण से सम्बन्धित।[4]

4. **संरक्षक और पोषक की भूमिका का सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक दबाव–** भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार सेना से सम्बन्धित 597 लोगों ने 5 वर्षों में आत्महत्या की थी। संभवतः दूरदराज क्षेत्रों में नियुक्त सिपाहियों ने पुरुष की समाज में स्थापित एक पोषक एवं संरक्षक की भूमिका का निर्वहन करने में असमर्थ होने का दबाव न झेल पाने के कारण आत्महत्या कर ली थी। आत्महत्या के प्रयास वाले सशस्त्र सेना बल के 22 प्रकरणों में 8 को नौकरी संबंधी, 2 को अनुशासनात्मक कार्यवाही, 6 में सहकर्मियों के बीच खराब सम्बन्ध और 3 में परिवार सम्बन्धी समस्यायें पाई गयीं।[6]

5. **व्यवहारगत एवं वातावरणीय कारक–** मादक पदार्थों के प्रभाव में भी पुरूषों में आत्महत्या करने की प्रवृति पाई गई है। एक अध्ययन में पुरूषों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं में 10.3 प्रतिशत शराब अथवा मादक द्रव्य सेवन के प्रभाव में की गयी पायी गयीं।[7] यही कारण अन्य अध्ययनों में भी पाया गया।[8,9,10] कई बार एक ही स्थान पर समान तरीके से आत्महत्या करने का चलन भी पाया गया है। भारत में प्रेस रिपोर्ट के अनुसार मुम्बई के बान्द्रा–वर्ली सी लिंक, नागपुर के गाँधी शहर लेक एवं चेन्नई के मरीन/इलियट बीच आदि पर बड़ी संख्या में लोगों द्वारा आत्महत्या करने का चलन पाया गया है।

6. **शारीरिक एवं जैविक कारक–** स्त्री व पुरुष के जैविक संगठन में स्पष्ट भिन्नता होती है जो कि पुरुषों द्वारा ज़्यादा आत्महत्या किये जाने का कारण हो सकती है। यद्यपि 'स्यूसाइड जीन' के विचार को अभी तक सिद्ध नहीं किया जा सका है तथापि न्यूजवीक की रिपोर्ट के अनुसार SKA2 जीन को आत्महत्या से सम्बन्धित होने की सम्भावना से इंकार भी नहीं किया जा सकता। SKA2 जीन 'स्ट्रेस हारमोन' को नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।[11] डॉ0 कीमन्स्की वाहन चालन(ड्राइविंग) का उदाहरण देते हुये कहते हैं कि बहुत तेज़ गति से ड्राइविंग की जा सकती है परन्तु व्यक्ति में गति धीमी करने की क्षमता भी होनी चाहिये।[12] SKA2 जीन वास्तव में तनाव की प्रक्रिया में गाड़ी के ब्रेक की तरह काम करता हैं और तनाव की प्रक्रिया को धीमा करने में सहायता करता है। शोधकर्ता मानते है कि कुछ लोगों में यह जीन प्रभावी रूप से 'ब्रेक' का काम नहीं करती। सिर्फ इसी एक जीन का अध्ययन करने वाली शोधकर्ताओं की टीम 80 से 90 प्रतिशत सत्यता तक बता सकती है कि सम्बन्धित व्यक्ति ने कभी आत्महत्या करने का विचार या प्रयास किया था अथवा नहीं।[13]

SKA2 जीन का कार्टीसाल सिस्टम से भी सम्बन्ध पाया गया जो स्त्रियों के इस्ट्रोजन सिस्टम से प्रतिक्रिया नहीं करता। डॉ0 कमिन्स्की इस तथ्य को भी स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों द्वारा अधिक आत्महत्या करने के कारण पर प्रकाश डालने में सहायक मानते हैं। सिरोटोनिन हारमोन सिस्टम को भी तनाव, अवसाद की स्थिति तथा आत्महत्या का निर्णय लेने से सम्बन्धित पाया गया है।[14] अवसाद की स्थिति को आत्महत्या के लिये ज़िम्मेदार

मानने में शोधकर्ता एकमत नहीं हैं। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियां अधिक अवसाद की शिकार होती हैं और आत्महत्या का प्रयास भी स्त्रियां ही अधिक करती हैं परन्तु दोनों ही के आत्महत्या करने के तरीके में अन्तर होता है। लायड–लेस्टर के अनुसार पुरुष अधिक घातक आत्महत्या करने के तरीके को अपनाते हैं। स्त्रियों के लिये आत्महत्या के प्रयास के पीछे सहायता पाने की उत्कंठा का मनोभाव हो सकता है जबकि पुरुषों के लिये यह एक कार्य को सम्पादित कर देने की इच्छा।[15] लैंगिक भिन्नता अवसाद के अनुभव में नहीं वरन् उसकी अभिव्यक्ति में भी परिलक्षित होती है।[16] ज्वाइनर अपने आत्महत्या के 'इन्टरपर्सनल मॉडल' में प्रस्तावित करते हैं कि आत्महत्या में लैंगिक भिन्नता का कारण सामाजिक–सांस्कृतिक वातावरणीय प्रभाव के अन्तर्गत स्त्री एवं पुरुषों द्वारा भिन्न–भिन्न रूप में अर्जित क्षमता होती है। इस अर्जित क्षमता के दो पक्ष हैं–प्रथम मृत्यु का भय न होना और दूसरा शारीरिक तकलीफ को सहन करने की क्षमता। पुरुषों की मनःस्थिति दोनों पक्षों पर अधिकांशतः खरी उतरती है।[17–19]

7. **निष्कर्ष–** पुरुषों द्वारा आत्महत्या के कारणों को समझने के लिये उनके मनो–जैविकीय एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना होगा। ऐशफील्ड के अनुसार– पुरुषों पर 'अपनी भावनाओं को छिपा कर रखने' और 'सहायता लेने में संकोच', तथा परम्परागत पौरुषीय अवधारणा के साथ ही संरक्षक व पोषक की भूमिका में बदलाव (हालांकि ये प्रभावी कारक हैं) आदि पर जोर देना, पुरुष–आत्महत्या जैसी समस्या को गम्भीरतापूर्वक न लेने के बजाय एक आसान विकल्प के रूप में प्रयोग करना है। शारीरिक तथा जैविक भिन्नता के साथ ही पुरुषों की वास्तविक जीवन शैली का समग्र अवलोकन करने की महती आवश्यकता है। समाज की पुरुषों से अपेक्षायें और उन अपेक्षाओं की पुरुष किस सीमा तक पूर्ति कर सकते हैं– यह गम्भीरतापूर्वक विचार करने का विषय है।

सन्दर्भ

1. डोवी, डाना(मई 18, 2015) अन्डरस्टैंडिंग मेल स्यूसाइडः हाउ सोशल एण्ड बायोलॉजिकल फैक्टर्स क्रियेटेड ए डेडली जेंडर गैप, https://www.medicaldaily.com
2. तदैव
3. कुमार, नीलोत्पल(अक्टूबर 11, 2018) अनरेवलिंग फॉर्मर्स स्यूसाइड इन इण्डियाः ईगोइज्म उण्ड मैस्क्यूलिनिटी इन पीजेन्ट लाइफ, https://www.oupjapan.co.jp/en/node/16579
4. https://www.thehindubusinesssline.com/opinion/books/a-fresh-perspective-on-farm-suicides/article9816426.ece.
5.https://www.timesofindia.indiatimes.com/india/597-militarypersonnelhave-committed-suicide-in-last-5years-government-says.
6. चक्रवर्ती, पी0 के0(2002) द सिग्नीफिकेन्स ऑफ अटेम्पटेड स्यूसाइड इन आर्म्ड फोर्सेज, इण्डियन ज0 साइकेटरी, खण्ड–44, मु0पृ0 277–282।
7. पुन्नूदुरई, आर0 एवं जयकर, जे0(1988) स्यूसाइड इन मद्रास, इण्डियन ज0 साइकेटरी, खण्ड–22, मु0पृ0 203–205।
8. उन्नी, के0 ई0, रोट्टी, एस0 बी0 एवं चन्द्रशेखरन, आर0(1995) एनएक्सप्लेनेटरी स्टडी ऑफ द मोटीवेशन इन स्यूसाइड अटेम्प्टर्स, इण्डियन ज0 साइकेटरी, खण्ड–37, मु0पृ0 169–175।
9. शर्मा, आर0 सी0(1998) अटेम्प्टेड स्यूसाइड इन हिमाचल प्रदेश, इण्डियन ज0 साइकेटरी, खण्ड–22, मु0पृ0 203–205।
10. शर्मा, आर0 सी0(1998) अटेम्प्टेड स्यूसाइड इन हिमाचल प्रदेश, इण्डियन ज0 साइकेटरी, खण्ड–40, मु0पृ0 50–54।
11. गलगाटी, आर0 बी0; राव, एस0; अशोक, एम0 वी0; अप्पया, पी0 एवं श्रीनिवास, के0(1998) सायकेटरी डायगनोसिस ऑफ सेल्फ पॉयजनिंग केसेसः ए जनरल हॉस्पिटल स्टडी, इण्डियन ज0 साइकेटरी, खण्ड–40, मु0पृ0 254–259।
12. डोवी, डाना(मई 18, 2015) अन्डरस्टैंडिंग मेल स्यूसाइडः हाउ सोशल एण्ड बायोलॉजिकल फैक्टर्स क्रियेटेड ए डेडली जेंडर गैप, https://www.medicaldaily.com/understanding-male-suicide-how-social-and-bilogical-factors-created-deadly-gender-333920
13. तदैव।
14. तदैव।
15. द सेरोटोनर्जिक सिस्टम इन मूड डिसऑर्डर्स एण्ड स्यूसाइडल बिहेवियर्स, https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3638390/
16. तदैव, 11, 12, 13
17. रुट्ज, डब्ल्यू0 एवं रिहमर, जेड0(2009) स्यूसाइड इन मेनः स्यूसाइड प्रिवेंशन फॉर द मेल पर्सन, डी0 वासरमैन एवं सी0 वासरमैन(संपादक) स्यूसाइडोलॉजी एण्ड स्यूसाइड प्रिवेंशनः ए ग्लोबल पर्सपेक्टिव, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, मु0पृ0 249–255।

18. जौइनर, टी0 ई0; विट्, जूनियर एवं अन्य(2010) द इण्टरपर्सनल थ्योरी ऑफ स्यूसाइड, साइकोलॉजिकल रिव्यू, खण्ड–117, अंक–2, मु0पृ0 575–600, https://dx.dr.org/10.1037/ a0018697
19. एशफील्ड, जे0 ए0(2010) डूइंग साइकोथेरेपी विद मेन–प्रैक्टिसिंग एथिकल साअकोथेरेपी एण्ड काउंसेलिंग विद मेन, पीकॉक पब्लिकेशंस, नॉर्वुड, https://www.psychology.org.au.inpsych/2012/august/beaton.